माओवाद की असफलता : साम्यवाद से पूंजीवाद तक

डॉ. शकील हुसैन*

https://orcid.org/0000-0003-1491-6784 Doi : Https://Doi.Org/10.61703/Re5

संक्षेप

माओवाद बीसवीं शताब्दी में सर्वाधिक उथल-पुथल मचाने वाला दर्शन है। लैटिन अमेरिका अफ्रीका एशिया के अनेक विकासशील देशों में माओवादी दर्शन ने राजनीतिक हिंसा को एक नया आयाम दिया है , हिंसा को महिमा मण्डित किया है। तीसरी दुनिया के अनेक देशों में माओवादी हिंसा राज्य के विरुद्ध एक गंभीर खतरे के रूप में उपस्थित हुई है। प्रस्तुत शोधपत्र यह विश्लेषण करने का प्रयत्न करता है कि माओवादी दर्शन में वे कौन से तत्व हैं जो राजनीतिक हिंसा के प्रति लोगों को आकर्षित करते हैं। चीन में साम्यवादी क्रांति के बाद से माओ की मृत्यु तक माओवाद की क्या सफलताएं और असफलताएं रहीं है। माओवाद क्या चीन का कोई हित कर सका है ? इन सब प्रश्नों के विश्लेषण के लिए चीन में क्रांति से लेकर मौत की मृत्यु तक माओ के द्वारा किए गए कार्य का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकालने की प्रयत्न किए गए हैं।

प्रमुख शब्दावली : माओ, चीन, क्रांति, डैनवेई, साम्यवाद , सौ फूल, लम्बी छलांग।

चीन मे साम्यवादी क्रांति

1917 में रूस में क्रांति हुई और 1919 में चीन में राजतंत्र की समाप्ति हुई और गणतंत्र की स्थापना हुई यह एक बड़ी घटना थी। लेकिन ***डाक्टर सनयातसेन और च्यांग काईशेक*** जैसे कुशल नेतृत्व के रहने के बावजूद गणतंत्र वहां स्थाई नहीं रह सका। लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिए कि चीन की क्रांति को बहुत व्यापक जन समर्थन प्राप्त था और लोग गणतंत्र नहीं चाहते थे बल्कि उसके मूल कारण अंतर्राष्ट्रीय थे। इसका कारण यह था की चीन के गणतंत्र को पश्चिमी देशों का अधिक समर्थन नहीं मिला क्योंकि पश्चिम की पूरी ताकत प्रथम विश्व युद्ध के बाद पश्चिम एशिया में तुर्की साम्राज्य का विध्वंस कर उसके बंदर बांट में लगी हुई थी। पश्चिम एशिया के तेल पर कब्जा उसका प्रधान लक्ष्य था। लेकिन दूसरी ओर 1924 में लेनिन की मौत के बाद सत्तारूढ़ स्टालिन ने **एक देश मे समाजवाद** के नारे के बावजूद ***क्रांति के निर्यात सिद्धान्त*** को परोक्ष रूप से जारी रखा। इसके अलावा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पश्चिम की प्राथमिकता *ट्रूमैन प्लान* और *मार्शल प्लान* द्वारा योरोप के सुदृढ़ीकरण की थी। अतः यह विश्वास करने के पर्याप्त कारण है सोवियत सहयोग से ही चीन में साम्यवादी क्रांति हुई और गणराज्यवादी शक्तियां माओ के हाथों परास्त हुई और **फरमूसा** अर्थात **ताइवान** में शरण लेनी पड़ी।

*सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान, शासकीय वीवाईटी पीजी स्वायत्त महाविद्यालय दुर्ग छत्तीसगढ़।

माओ की दिशाहीन राजनीति और अर्थहीन अर्थनीति

- ***अन्तर्विरोध के सिद्धान्त*** के अतिरिक्त उसने कोई व्यवस्थित दर्शन नही दिया और अन्तर्विरोध के सिद्धान्त को भी उसने स्वयं ही कूड़ेदान मे फेक दिया।
- राजनीति के नामपर जनता को मनमाने वर्गो मे बलपूर्क समूहित कर उपयोग किया और विरोधियों का नरसंहार किया ।
- सांस्कृतिक क्रांति के नामपर युवाओ को भुलावे मे रखकर उनसे नरसंहार कराया गया।
- अर्थनीति मे किसानो से इस्पात बनवाने जैसी अव्यवहारिक नीति से करोड़ो लोगो को अकाल के गाल मे समा दिया।
- अन्ततः 1976 मे माओ की मौत के बाद पूंजीवादी बाजार आधारित अर्थव्यवस्था अपनाने पर ही चीन की आर्थिक प्रगति हो सकी।

इस प्रकार व्यवहारिक रूप से माओवाद का नाश माओ के जीवन में ही हो चुका था और उसकी मृत्यु के साथ ही इसकी अंत्येष्टि भी हो गयी क्योंकि उसके उत्तराधिकारी ***देंग ज़ाओ पिंग*** ने माओवाद को पूरी तरह त्याग करके **पूंजीवादी बाजार आधारित अर्थव्यवस्था** को स्वीकार कर लिया।

माओवाद और हिंसक आन्दोलनो के प्रतिआकर्षण का कारण।

आश्चर्यजनक रूप से माओवाद का आदर्श कई देशों में पथभ्रष्ट युवकों को क्यों आकर्षित करता है ?

वस्तुतः लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणाली में बुद्धिजीवी वर्ग का एक हिस्सा ***राज्य के कार्यो के विरुद्ध एक प्रतिरोधी शक्ति*** के रूप में अपनी बौद्धिक प्रतिभा का इस्तेमाल करता है। एक स्वस्थ लोकतंत्र मे इसे अच्छा माना जाता है और इसे सिविल सोसायटी कहा जाता है। लेकिन अनेक देशो मे विशेषतः विकासशील देशो मे कई बार विदेश नीति के उपकरण के रूप में विदेशी ताकतें भी इन बौद्धिक वर्गों का इस्तेमाल करती हैं। उन्हें लोक कल्याण और रिसर्च प्रोजेक्ट के नाम पर फंडिंग की जाती है और एक वैचारिक आंदोलन खड़ा करने के लिए हर प्रकार की सहायता उपलब्ध कराई जाती है , जो राज्य के विरुद्ध एक प्रतिरोधी शक्ति के रूप में कार्य कर सके। फलतः वे एक वैचारिक आडंबर खड़ा करते हैं जो वास्तविकता से बहुत दूर होता है। जिसके कारण हिंसावादी विचारधाराएं महिमा मंण्डित की जाती हैं उनके कुछ नेता जैसे **चे ग्वेरा,** कुछ चिंतक जैसे **फ्रांट्ज फैनन** आदि हीरो के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं। विद्यमान प्रतिनिधित्व प्रणाली को पश्चिमी बताकर असंतोष पैदा किया जाता है, हिंसा को महिमाण्डित किया जाता है। अतः किसी के लिए भी जो माओवाद से प्रभावित है उसके लिए आवश्यक है कि वह माओ के जीवन काल की समस्त घटनाएं जो आसानी से इंटरनेट पर उपलब्ध है उन्हें पढ़े और स्वयं मूल्यांकन करे। 1976 तक खुद माओ ने चीन को राजनीतिक और आर्थिक बर्बादी के अलावा कुछ नही दिया तो ऐसा व्यक्ति और उसका दर्शन कैसे किसी का आदर्श हो सकता है ? ।

डैनवेई : प्रारम्भिक सुधार और समाज का दलीयकरण

"डैनवेई एक साथ स्थानिक निर्माण खंड, दैनिक जीवन का केंद्र और चीनी समाजवादी शहर में सामाजिक पहचान का मुख्य स्रोत था। डैनवेई एक सामान्य शब्द है जो समाजवादी कार्यस्थल और उसमें शामिल गतिविधियों को संदर्भित करता है। कम्यूनिस्ट पार्टी ने कार्यस्थल के माध्यम से शहर को संगठित किया। जमीनी स्तर की उत्पादन इकाई, चाहे वह कारखाना हो, सरकारी ब्यूरो, स्कूल या अस्पताल, चीनी श्रमिक के जीवन के लगभग हर पहलू को छूती थी: इसने रोजगार और आवास, भोजन प्रावधान और स्नानघर, बाल देखभाल और प्रारंभिक स्कूली शिक्षा, चिकित्सा उपचार और कल्याण सेवाएं, राजनीतिक अध्ययन और पार्टी सदस्यता, विवाह और तलाक, पुलिस और सुरक्षा प्रदान की।" (हिल 2005)

माओ ने राष्ट्रीय स्तर पर कुछ लोकप्रिय एवं संगठनात्मक लागू नीतियां कीं।

- किराए को कम करना
- किसानों को भूमि का पुनर्वितरण
- चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) के तहत चीनी समाज का बलपूर्वक पुनर्गठन
- चीन की आबादी को किसानों, जमींदारों, मजदूरों, पूंजीपतियों आदि जैसे अलग-अलग समूहों में वर्गीकृत कर **डैनवेई** , या कार्य इकाई (वर्क शाप) बनायी गयी और पंजीकरण कार्ड जारी किए गए।
- ये **डैनवेई** उत्पादन, राशन, आवास, यहां तक कि विवाह आदि से लेकर तक हर चीज पर राज्य के निगरानी के तंत्र के रूप में काम करते थे।
- साथ ही पार्टी के राजनीतिक अभियानों के लिए लामबंदी या समर्थन का कार्य भी करते थे।
- इनसे अफीम की लत छुड़ाने और वेश्यावृत्ति जैसी सामाजिक बुराइयों से का सामना करने मे सफलता मिली।
- इन्ही समूहो का प्रयोग क्रांति के दुश्मनों के नाम पर विरोधियों को समाप्त करने मे भी किया गया। (क्ब्राउन : 2012)

समाज का समूहीकरण

माओ ने अपनी नीतियो को लागू करने के लिए दो मोर्चों पर काम किया

1- शहरों में औद्योगिकीकरण और

2- ग्रामीण इलाकों का समूहीकरण।

इसके लिए, सोवियत संघ के पंचवर्षीय योजना माडल को अपनाया। जहां पहले ही 60 से 80 लाख लोग मारे जा चुके थे। इसके लिए जो मॉडल बनाया गया वह यह था कि कृषि का समूहीकरण के द्वारा सहकारीकरण किया जाएगा और कृषि विकास से जो पूंजी का सरप्लस होगा उसे शहरों के औद्योगीकरण में निवेश किया जाएगा। इसमें प्रारंभिक सफलता भी मिली क्योंकि इसमें प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों प्रकार से सोवियत सहयोग भी माओ को मिल रहा था। अतः प्रारंभिक स्तर पर ट्रैक्टर और खेती की मशीने,रासायनिक खाद इत्यादि का उत्पादन औद्योगिकरण में किया गया। चीन के ग्रामीण इलाके जहां लगभग 75 प्रतिशत आबादी रहती थी और जहां राज्य

ने कृषि का सामूहिकीकरण शुरू किया था वहां जमींदारों से ज़मीन जब्त कर किसानों को फिर से वितरित किया गया। सामूहिकीकरण का अंतिम लक्ष्य निजी स्वामित्व का उन्मूलन, तथा साम्यवाद की स्थापना थी।

समूहीकरण

इसे कई चरणों में आगे बढ़ाता गया, क्लेटन डी. ब्राउन ने इसका विस्तार वर्णन किया है।

- दस परिवारों को पारस्परिक सहायता टीमों Mutual aid terms (MAT) में समाजवाद के लिए एक ईकाई बनायी गयी जिसमे प्रत्येक परिवार को अपने श्रम, औजारों और पशुओ सहित अन्य टीम सदस्यों के साथ सहकार के लिए तैयार किया गया।
- निम्न-स्तरीय कृषि उत्पादक सहकारी समितियों (APC) का गठन किया गया।
- पाँच टीमों या पचास परिवारों से मिलकर निचले लेवल पर एक Agricultural producers cooperatives APC बनाई गई, परिवारों ने अपनी भूमि के टुकड़े पर स्वामित्व बनाए रखा और भूमि और श्रम के उनके योगदान के आधार पर उन्हें मुआवजा दिया गया।
- 1955 के अंत मे **पाँच** निम्न-स्तरीय सहकारी समितियों को **उच्च-स्तरीय सहकारी समितियों** में मिला दिया गया, जिसमें प्रत्येक में लगभग **250 परिवार** शामिल थे।
- भूमि पर निजी स्वामित्व पूरी तरह समाप्त कर दिया गया; जानवर, उपकरण या अन्य संसाधन सहकारी की संपत्ति बन गए; और मुआवजे के लिए **श्रम** ही एकमात्र मानदंड बन गया।
- **पहली पंचवर्षीय योजना ने प्रभावशाली परिणाम दिए। चीन की समग्र अर्थव्यवस्था में प्रति वर्ष लगभग 9 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिसमें कृषि उत्पादन में प्रति वर्ष लगभग 4 प्रतिशत की वृद्धि हुई और औद्योगिक उत्पादन में प्रति वर्ष लगभग 19 प्रतिशत की वृद्धि हुई।** जीवन प्रत्याशा बीस वर्ष तक बढ़ गयी। (स्कोपा, 2010)
- लेकिन जैसे-जैसे सामूहिकरण अधिक बढ़ता गया, समस्याएं भी बढ़ती गईं।
- उत्पादन और विकास के फर्जी आंकड़े पेश किए जाने लगे , माओ को पसंद आने वाली सूचनाएं दी जाने लगीं। फलतः वे दूसरी पंचवर्षीय योजना के साथ आगे बढ़ें, जिसे ***ग्रेट लीप फॉरवर्ड*** के रूप में भी जाना जाता है।

सौ फूल खिले : अन्तर्विरोध Contradiction सिद्धान्त को लागू करना।

माओ ने अपने जीवन का संभवतः एक मात्र अच्छा काम यही किया था। माओ का प्रसिद्ध सिद्धांत है अंतर्विरोध का सिद्धांत जिसमें वह यह बताता है की अंतर्विरोध स्वाभाविक है और यह प्रत्येक स्तर पर विद्यमान रहते हैं। यदि अंतर्विरोधों को मुखरित होने दिया जाए और उन्हें यथा स्थान दिया जाए तथा संगठन सुचारू रूप से चले तो संगठन की क्षमता से इन अंतर्विरोधों का प्रयोग पार्टी और संगठन की भलाई के लिए किया जा सकता है इसलिए उसने 1956 की शुरुआत में, जब पहली पंचवर्षीय योजना अपने चरम पर थी, **सौ फूल खिले** नाम से विचार आमंत्रित करने का एक अभियान चलाया जिसके अंतर्गत उसकी मान्यता थी कि परस्पर विरोधी विचार आएंगे जो

सौ विभिन्न फूलो के खिलने जैसा होगा, और पार्टी की संगठनात्मक क्षमता से उनका समायोजन कर समाज को संगठित किया जाएगा जिसे पार्टी का आधार विस्तृत होगा और लोगों को साम्यवादी शिक्षाओ में समृद्धि किया जा सकेगा। परिणामतः चीनी बुद्धिजीवियों और जनता से **सौ फूल खिले अभियान के नाम से टिप्पणियां आमंत्रित कीं गयीं ।** वैज्ञानिकों साहित्यकारों, छात्रों और आम लोगों ने पार्टी की नीतियों की आलोचना की। इसे न केवल सहन किया गया बल्कि प्रोत्साहित भी किया गया।

"यहां तक कि गैर-कम्युनिस्ट बुद्धिजीवियों द्वारा भी, चीनी शास्त्रीय इतिहास के एक प्रसिद्ध नारे के साथ, "सौ फूल खिलने दो, और सौ विचारधाराएं संघर्ष करें।" आलोचना विकसित होने में धीमी थी, लेकिन 1957 के वसंत तक समाज के मुखर सदस्यों ने खुले तौर पर कम्युनिस्ट नीतियों की आलोचना शुरू नहीं की थी; कुछ ही हफ्तों के भीतर पार्टी की आलोचना की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही थी। दीवार के पोस्टरों ने सरकार के हर पहलू की निंदा की, और छात्रों और प्रोफेसरों ने पार्टी सदस्यों की आलोचना की।" (ब्रिटैनिका) लेकिन दो घटनाओं से माओ डर गया और उसने इसे रोक दिया।

- पहली घटना थी निकिता ख्रुश्चेव द्वारा स्टालिन की आलोचना और रूस का डी-स्टालिनाइजेशन करना।
- दूसरी घटना थी कि 1956 मे हंगरी में सोवियत संघ के खिलाफ विद्रोह हो गया जिसे बहुत बेदर्दी से कुचला गया।

इन दो उदाहरणों ने माओ को बुरी तरह डरा दिया और उसने इस अभियान को वापस ले लिया और विरोध को कुचलने का रास्ता अपनाया तथा ***दक्षिण पंथ*** के नाम से विरोधियों का सफाई करना प्रारम्भ किया।

ग्रेट लीप फारवर्वड - लम्बी छलांग : माओवाद की वास्तविक बर्बादी

माओ पश्चिम के अत्यधिक बड़े कल कारखानो का मजाक उड़ाया करता था। उसने दूसरी पंचवर्षीय योजना की सफलता का दारोमदार किसानों के कंधो पर डाला। साथ ही उसने एक सनक भरी योजना लागू की कि *किसान खेती के साथ ही इस्पात का उत्पादन भी करेंगे और इसके लिए खेतों के पीछे ही छोटी-छोटी भट्टियां बनाई जाएगी*। 1962 में इस योजना की समाप्ति तक चीन इस्पात उत्पादन में ब्रिटेन को पीछे छोड़ देगा और अमेरिका की बराबरी कर लेगा। यह कृषि और उद्योग दोनो मे ऐसी लम्बी छलांग होगी जिससे चीन पश्चिम के बराबर हो जाएगा। (मैकफारक्वार : 1983) उसके लिए बड़े-बड़े ***कम्यून*** की स्थापना की गई और इसमें *5500 परिवारों को संलग्न कर दिया गया* अर्थात् एक कम्यून में 5500 घर थे जो पुरानी इकाई के मुकाबले 20 गुना से भी अधिक बड़े थे। खेतों के पीछे इस्पात की छोटी-छोटी भट्टियां बनाई गयीं। और उन भट्टियो को चलाने के लिए ईधन के रूप में लकड़ियों का इस्तेमाल किया गया। परिणामतः 10% से अधिक जंगल काट दिए गए। (कम्यूनो पर अधिक उत्पादन और लगातार काम करने का इतना दबाव था कि किसान बेचारे रात भर खेतों में काम करते थे और इसके लिए उन्हें ***"चांद और तारे पकड़ना"*** जैसे नारे सुनाए गए (ब्राउन,2012)। छोटी इस्पात भट्टियों में लकड़ियों की कमी होने लगी तो किसानों ने अपने घर के फर्नीचर और दरवाजे तक जलाए। (शापिरो, 2001)इस्पात के लिए लौह अयस्क की कमी थी तो लोहे औजारो और घरेलू उपयोग के सामानो को गलाया गया। फलतः इस्पात की बजाए लोहे के कबाड़ जमा होते गए। सरकारी अधिकारियों ने माओ को खुश करने वाले आंकड़े प्रस्तुत किए। अधिक उत्पादन की तस्वीरें प्रसारित की गई। 132 पाउण्ड के एक बड़े कद्दू को ट्राली पर रखकर घूमने जैसी

तस्वीर न्यू चाइना एजेंसी ने प्रकाशित की। (चांग एवं स्वांस, 2003) लेकिन हकीकत में उत्पादन और विकास के झूठे आंकड़ों के बावजूद 1960 में खाद्यान्न उत्पादन 30% तक गिर गया। (बेकर : 2009) इससे उलट माओ को बहुत अधिक उत्पादन की सूचना दी गई , और कम्यूनो पर टैक्स 20 से बढ़कर 28% कर दिया गया। माओ का आतंक इतना था कि लोगों ने करों के रूप में अपने पूरे अनाज दे दिए क्योंकि 28% प्रतिशत कर देना था। फलतःउनके खाने के लिए कुछ नहीं या बहुत कम बच रहाथा,फिर भी निर्यात जारी रखा गया। परिणामतः खाद्यान्नों के भंडार काम होते गए और धीरे-धीरे भुखमरी बढ़ती गई। पश्चिमी दुनिया से आंकड़ों को छुपा के रखा गया फिर भी 2.3 करोड़ से लेकर 5 करोड़ तक लोगों के मरने की खबरें रही लेकिन अधिकांशतः सूचना 3 करोड़ की फैली। अर्थात ***दूसरी पंचवर्षीय योजना में "लंबी छलांग" लगाने वाला माओ मुंह के बाल गिर पड़ा लेकिन चोट उसे नहीं लगी बल्कि चीन के 3 करोड़ नागरिकों की जान चली गई।*** इन सब विफलताओं से बचने और ध्यान भटकाने के लिए उसने 1962 में भारत पर आक्रमण किया और विजय के नारो के बीच 3 करोड लोगों की मौत को भुला दिया गया। माओ के सबसे वफादार नेताओं में से एक रक्षा मंत्री **पेंग देहू आई** ने माओ को हकीकत बताने की हिम्मत की। परिणामतः उसे दक्षिणपंथी घोषित कर दिया गया और घर में नजर बंद कर दिया गया। क्रांति के लिए पूंजीवादी खतरे की घोषणा की गई और दक्षिण पंथ के विरुद्ध आंदोलन को जरूरी बताया गया। कथित लंबी चलांग की असफलता का बयान करने वाले हर व्यक्ति को दक्षिणपंथी घोषित किया गया।

दक्षिणपंथ विरोधी अभियान और विरोधियों का सफाया।

क्रांतिविरोधी, प्रतिक्रियावादी, उदारवादी बुर्जुआ, सर्वहारा विरोधी और दक्षिणपंथी यह सब ऐसी शब्दावलियां है जो साम्यवादी शासन में राजनीतिक विरोधियों को समाप्त करने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं। माओ ने 8 जून 1957 को दक्षिणपंथी विरोधी अभियान चालू किया। दूसरे शब्दों में जिन 100 फूलों को खिलाने का काम माओ ने खुद शुरू किया था उन्ही 100 फूलों को कुचलने का आदेश भी उसने दिया। कुल आबादी का 5% से कुछ अधिक लोगों को दक्षिणपंथी के रूप में चिन्हित किया गया और उनके सफाई का अभियान माओ की मृत्यू के तीन साल बाद 1979 तक चलता रहा और करोड़ो नागरिको को समाप्त कर दिया गया।

सांस्कृतिक क्रांति और जनसंहार

1966 में शुरू की गयी सांस्कृतिक क्रांति बहुत बदनाम रही है। इसमें भी करोड़ों लोग मारे गए वास्तव में ग्रेट लीप फॉरवर्ड की असफलता से माओ बहुत डरे हुए थे। वह समझ रहे थे कि समाज में संतोष चल रहा है इसके लिए उन्होंने साम्यवाद के नाम पर अपने प्रति वफादार लोगों को अपने चारों इकट्ठा करना और अपने प्रति वफादार लोगों की एक उपद्रवी सेना बनाना आवश्यक समझा, जिसे कभी लेनिन ***वैंगार्ड आफ कम्युनिज्म साम्यवाद का हारावल दस्ता*** कहा करते थे। माओ का यह हरावल दस्ता **रेड गार्ड्स** के नाम से जाना गया। सांस्कृतिक क्रांति के दौरान 1976 तक इसने बहुत रक्त बहाया। माओ ने कम्युनिस्ट पार्टी में पद सोपान को स्वयं की वफादारी के अनुरूप ठीक किया।

पोलित ब्यूरो से **देंग जाओ पिंग** जैसे बड़े और वफादार नेताओ को हटा दिया ।सेना से संदिग्धो की सफाई की गयी । जनता को भरमाने के लिए कुछ नए नारे गढ़े गए, पश्चिम की आधुनिकता को टारगेट किया गया, और परंपराओं की ओर लौटने का नारा दिया गया जिसमें चार नारे प्रमुख थे जिन्हे ***फोर ओल्डस*** के नाम से जाना जाता है। ***ओल्ड कल्चर, ओल्ड कस्टम, ओल्ड हैबिट, ओल्ड बिलीफ्स*** । युवाओं को रेड गार्ड व सांस्कृतिक क्रांति की झंडा बरदारी दी गई । *"जियांग किंग जैसे नेतृत्व के कट्टरपंथी सदस्यों ने छात्रों के दस्तों को आर्मबैंड वितरित किए और उन्हें "रेड गार्ड्स - नई क्रांतिकारी उथल-पुथल की अग्रिम पंक्ति" घोषित किया ।" (स्टेफ़नी : 2005)*

हर वो चीज जो माओ को पसंद नहीं थी रेड गार्ड्स ने मिटा दी । *"रेड गार्ड्स को सांस्कृतिक क्रांति को एक वर्ग संघर्ष के रूप में देखने का निर्देश दिया गया था, जिसमें हर उस चीज पर हमला किया जाना चाहिए जो समाजवादी व्यवस्था और सर्वहारा तानाशाही के अनुकूल नहीं है।" (स्टेफ़नी : 2005)* चीन की विशालकाय सेना के प्रमुख ***लिंन बियाओ*** ने ***लिटिल रेट बुक*** के नामक एक माओ चालीसा सैनिको को बांचना अनिवार्य कर दिया ।

"अगस्त 1966 में, केंद्रीय समिति ने क्रांति के लक्ष्यों को परिभाषित करने के प्रयास में "महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के संबंध में चीनी पार्टी की केंद्रीय समिति का निर्णय" (जिसे सोलह बिंदु भी कहा जाता है) नामक एक निर्देश जारी किया। उस महीने के अंत में, माओ ने "लिटिल रेड बुक" को ऊपर उठाए हुए रेड गार्ड्स की विशाल परेड का स्वागत करना शुरू कर दिया।" (स्टेफ़नी , 2005) अपने ही लोगो पर माओ के अविश्वास का आलम यह था कि सेना प्रमुख लिन बियाओ को उत्तराधिकारी घोषित करने बाद उसे खतरा मानने लगे और लिन को भी जान गवानी पड़ी । देंग जाओ पिंग को हटाया गया, फिर वापस लाया गया । झाओ झियांग जैसे वरिष्ठ वफादार भी खतरे मे रहे । 1976 मे अंततः माओ की मृत्यू हुई । तीनवर्ष के उथल पुथल के बाद ***देंग ज़िआओ पिंग*** चीन के निर्विवाद नेता बने ।

देंग ज़िआओ पिंग और माओवाद की अंत्येष्टी

यह माओ के निकट सहयोगी थे । वह जानते थे की माओ ने बेतुके सिद्धांतों से चीन को बर्बादी के अलावा कुछ हासिल नहीं होगा । इसलिए उन्होंने मार्केट इकोनामी की ओर रुख किया और बाजार की ताकत को समझा । लाल झंडे के कलेवर के अंदर पूर्ण पूंजीवादी व्यवस्था स्थापित की । जिसपर कभी माओ ने गम्भीर हमले किए थे , उसी मुक्त बाजार आधारित पूंजीवादी व्यवस्था के अपनाने पर चीन का वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद 1970 के 232 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2019 में 16 ट्रिलियन डॉलर हो गया । (जेम्स, 2023) यह अपरिमित आर्थिक प्रगति बाजार अर्थव्यवस्था से आयी न की नियंत्रित साम्यवादी व्यवस्था से । *"डेंग ने कानूनी बाजारों और गैर-राज्य उद्यमों को अधिक सुरक्षित संपत्ति अधिकारों के साथ उभरने की अनुमति देकर स्वतंत्रता का विस्तार किया। " (जेम्स, 2023)*

डेंग ने बाजार अर्थव्यवस्था अपनाने के बावजूद समाजवाद का दिखावा जारी रखा । साम्यवाद और पूंजीवाद के इस घालमेल को उन्होने बाजार समाजवाद कहा । और इसका सिद्धान्तीकरण करने का भी प्रयास किया । " *जैसा कि डेंग ने अपने दक्षिणी दौरे पर लोगों को याद दिलाया, "'एक केंद्रीय कार्य और दो बुनियादी बिंदुओं' के सिद्धांत का पालन करना आवश्यक है।समाजवाद का निर्माण केंद्रीय कार्य है, जबकि दो बुनियादी बिंदु "सुधार की*

नीतियों" को लागू करना और "बाहरी दुनिया के लिए खोलना" हैं। (जेम्स, 2023) देंग ने आर्थिक उदारीकरण ऊपर से नीचे की ओर नही बल्कि नीचे से ऊपर लागू किया। तटीय क्षेत्रो मे ***शिन्जेन, झुआई, शान्ताऊ, जियामेन*** जैसे बड़े-बड़े एस ई जेड स्थापित किए गए। 1985 से 90 तक इन चार केदो में औद्योगिक उत्पादन का सकल मूल्य 5.5 बिलियन से बढ़कर 49.5 बिलियन तक हो गया। विदेशी व्यापार में लगी घरेलू कंपनियों की संख्या 1978 में केवल 12 थी जो 1988 में 5000 से अधिक हो गयी और 2001 में जब चीन विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बना तब उनकी संख्या 35000 पार कर चुकी थी। (जेम्स, 2023) विदेशी पूंजी का स्वागत किया गया। निवेशकों के अनुरूप लेबर रिफॉर्म्स किए गए। न्यूनतम मजदूरी बहुत कम रखी गयी और निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित किया गया, व्यक्तिगत संपत्ति की अनुमति दी गई। ***इस तरह माओवाद के सारे नियमो को तिलांजली दे दी गयी***।

थियानमेन नरसंहार : लोकतांत्रिक आन्दोलन का दमन।

देंग ने बाजारवादी अर्थव्यवस्था अपनाने के साथ ही पार्टी में भी सुधारवादी नेताओं को महत्व दिया। उन्होंने एक अपेक्षाकृत उदारवादी नेता ***हू याओ बांग*** को कम्युनिस्ट पार्टी का महासचिव 1980 में नियुक्त किया। उनकी मान्यता थी कि बाजारवादी अर्थव्यवस्था के साथ ही पार्टी में भी अपेक्षाकृत लोकतंत्र होना चाहिए।

वास्तव में नवीन अर्थनीति अपनाने के बाद चीन के विश्वविद्यालयो में लोकतंत्र के प्रति आकर्षण बढ़ा कुछ अंतर्राष्ट्रीय घटनाएं भी ऐसी थी जो सहयोग कर रही थी। जैसे सोवियत संघ में मिखाइल गोर्बाचोव के सत्तासीन होने के बाद ***ग्लास्तनोस्त*** और ***पेरेस्त्रोइका*** नाम से सुधारवादी कार्य शुरू हुए। गोर्बाच्येव ने चीन की भी यात्रा की जिससे लोकतांत्रिक सुधारवादियों की हिम्मत और बढ़ी।

हू याओ बांग ने भी पार्टी में कुछ सुधार शुरू किया किंतु सत्ता संघर्ष में उन्हें प्रतिक्रियावादी माना गया और 1987 की शुरुआत में उन्हें इस्तीफा देने पर मजबूर किया गया। उनके समर्थन मे आन्दोलन चल ही रहे थे कि 1989 मे उनकी मृत्यू हो गयी। उदारवादी होने के कारण हू याओ बांग की स्थिति शहीद की हो गई। 22 अप्रैल को उनके अंतिम संस्कार के दिन थियानमेन चौक पर भारी मात्रा में भीड़ इकट्ठा हुई जो हफ्ते दर हफ्ते बढ़ती गयी। इनके समर्थन में युवाओं व छात्रों का प्रदर्शन **शंघाई नानजिंग चांगशा चेंगदू शियान** आदि दूसरे क्षेत्र में भी फैल गया। मई के दूसरे हफ्ते में मार्शला लगा दिया गया। अंततः 3 जून की रात टैंक भेजकर अपने ही हजारो युवाओ को कुचल दिया गया। उसकी गंभीर वैश्विक प्रतिक्रिया हुई चीन को पश्चिमी प्रतिबंध का भी सामना करना पड़ा और उसकी जीडीपी 1987 के 11.5 से गिरकर 1990 में 3% पर आ गई। किंतु चीन ने बड़ी निर्ममता के साथ लोकतांत्रिक आंदोलन को कुचल दिया।

निष्कर्ष

संपूर्ण विश्लेषण से एक बात स्पष्ट होती है कि वर्तमान समय में चीन में जो राजनीतिक और आर्थिक प्रणाली है वह न तो साम्यवाद है और न माओवाद। माओवाद का अंत तो उसकी मृत्यु के साथ ही हो गया।वर्तमान प्रणाली एक बाजार आधारित पूंजीवादी अर्थव्यवस्था है जो एक राजनीतिक तानाशाही के लौह आवरण के अंतर्गत कार्य कर रही है।

पश्चिमी दुनिया की यह मानता है कि लोकतंत्र और बाजार अर्थव्यवस्था सहोदर हैं अर्थात भाई-भाई हैं एक ही सिक्के के दो पहलू है। बाजार अर्थव्यवस्था को नियंत्रित राजनीतिक तानाशाही के साथ बहुत लंबे समय तक नहीं चलाया जा सकता। अंततः लोग स्वतंत्रता की मांग करते हैं और राजनीतिक व्यवस्था भी बदलती है। इसी योजना के साथ अमेरिका और यूरोप में चीन को अपने बाजार उपलब्ध कराए उसे विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बनने दिया। आज यूरोप से 681 बिलियन डॉलर और संयुक्त राज्य अमेरिका से 631 बिलियन डॉलर जापान से 327 बिलियन डॉलर दक्षिण कोरिया से 313 बिलीयन डॉलर और आसियान देशों से 575 बिलियन डॉलर का व्यापार चीन कर रहा है। जिनमें से दक्षिण कोरिया और जापान के आलावा सभी के साथ व्यापार संतुलन चीन के पक्ष में है। इसमें महत्वपूर्ण यह है कि यह सभी देश अमेरिका के प्रभाव वाले देश हैं

लेकिन जिन पिंग की विस्तारवादी नीतियों ने भारत प्रशांत क्षेत्र में जिस तरह से समस्याएं पैदा की है और पश्चिम की जासूसी शुरू की है उससे यूरोप और अमेरिका के सामने सुरक्षा का प्रश्न फिर से महत्वपूर्ण हो गया है और अमेरिका ने चीन के लिए अपने बाजार बंद करने चालू कर दिए हैं। अमेरिकी कंपनियों को भी वहां से निकलने के लिए कहा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि अमेरिका चीन में विदेशी निवेश कम हुआ है और अमेरिका की कई कंपनियों ने अपने उत्पादन यूनिट चीन में बंद करने प्रारंभ कर दिए हैं। फिनांसियल टाइम्स (7 सितम्बर 2023) मे राबिन विगल्सवर्थ की रिपोर्ट के अनुसार जेपी मॉर्गन का अनुमान है कि 2019 से विभिन्न सूचकांकों में शामिल होने के कारण चीनी बॉन्ड में प्रवाहित होने वाले लगभग 250-300 बिलियन डॉलर के अंतर्राष्ट्रीय धन का आधा हिस्सा अब बाहर निकल चुका है। चीनी इक्विटी के विदेशी स्वामित्व में 100 बिलियन डॉलर से अधिक की गिरावट आई है। इससे भी ज़्यादा चौंकाने वाली बात यह है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी कम हो रहा है। जेपी मॉर्गन के अनुसार, 2023 की दूसरी तिमाही में एफडीआई प्रवाह 4.9 बिलियन डॉलर रहा, जो पिछले 26 वर्षों में सबसे कम है। इस प्रकार चीनी उत्पादों पर आर्थिक निर्भरता पश्चिमी जगत काम करना चाहता है। मूल विषय यह है कि चीन उसकी आर्थिक प्रणाली और तानाशाही पूर्ण राजनीतिक प्रणाली विशेष कर माओवादी राजनीतिक आर्थिक दर्शन किसी भी प्रकार से कोई आदर्श उपस्थित नहीं करता। कैटो इन्टीट्यूट के वरिष्ठ फेलो ***मैरियन एल. टुपी*** की रिपोर्ट के अनुसार हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में डेविस सेंटर फॉर रशियन एंड यूरेशियन स्टडीज के प्रोफेसर मार्क क्रेमर संपादित "द ब्लैक बुक आफ कम्यूनिज्म" के शोध से पता चलता है कि विश्व भर के कम्युनिस्ट शासनो के तहत अप्राकृतिक मौत से मरने वाले लोगों की कुल संख्या 80 मिलियन (8 करोड़) से अधिक है। चीन के तीव्र आर्थिक विकास और चमचमाती इमारतो के पीछे खतरनाक उद्योगो और खनन में हजारों नागरिक सालाना मारे जाते हैं जिनकी कोई सुनवाई नहीं होती। तानाशाही व्यवस्था केवल परिणाम पर निगाह रखती है। नेशॅनल इन्स्टीट्यूट आफ हेल्थ के ***डा जाओ तैंग और सहयोगी*** "***चीन में राष्ट्रीय कोयला-खनन दुर्घटना डेटा का विश्लेषण, 2001-2008"*** नामक अपनी रिपोर्ट मे बताते है कि किस प्रकार भारी मात्रा मे लोग चीन की कोयला खदानो जान गवां रहे है। 2001मे 2613, 2002मे 4251, 2003 मे 4899, 2004 मे 3603, 2005 मे 3603 लोग मारे गए। (राब्सन एट अल, 2011) वास्तविक आंकड़े इससे बहुत अधिक हो सकते हैं। अतः ***विचारधाराओ के नाम पर सत्ता को मुट्ठी मे भरकर तानाशाही करने वाली साम्यवादी माओवादी शक्तियां गणतंत्र के नाम पर तंत्र के अधीन गण को दास बना देती है। यह किसी का आदर्श नही हो***

सकतीं। मनुष्य की स्वतंत्रता सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अतः लोकतांत्रिक प्रणाली का कोई विकल्प नही है।

संदर्भ :

1. बेकर जी (2009): अकाल: एक संक्षिप्त इतिहास। प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2009
2. ब्राउन सी डी (2012) : चाइनास ग्रेट लीप फारवर्ड। एजूकेशन एबाउट एशिया, खंड 17:3 (शीतकालीन,2012) https://www.asianstudies.org/publications/eaa/archives/chinas-great-leap-forward
3. चांग जे एवं स्वांस डब्ल्यु (2003) : *थ्री डॉटर्स ऑफ चाइना* न्यूयॉर्क: टचस्टोन, 2003.https://archive.org/details/wildswansthreeda0000chan_d9j0
4. हिल आर। (2005) : "डेविड ब्रे की समीक्षा, शहरी चीन में सामाजिक स्थान और शासन: मूल से शहरी सुधार तक डैनवेई प्रणाली," एच-अर्बन, एच-नेट समीक्षा, जुलाई, 2005। http://www.h-net.org/reviews/showrev.cgi?path=147701128105614.
5. जेम्स ए. डी (2023) : *चीन का 1978 के बाद का आर्थिक विकास और वैश्विक व्यापार प्रणाली में प्रवेश।* काटो इन्स्टीट्यूट https://www.cato.org/publications/chinas-post-1978-economic-development-entry-global-trading-system
6. मैकफारक्वार आर (1983): द ओरिजिन्स ऑफ द कल्चरल रेवोल्यूशन, द ग्रेट लीप फॉरवर्ड, 1958-1960 न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1983 https://archive.org/details/greatleapforward0002unse
7. फूल अभियान चीनी इतिहास https://www.britannica.com/event/Hundred-Flowers-Campaign
8. 1. रॉबसन एमजी, मिंग-शियाओ डब्ल्यू, ताओ जेड, मियाओ-रॉन्ग एक्स, बिन जेड, मिंग-किउ जे. (2011) : *चीन में राष्ट्रीय कोयला-खनन दुर्घटना डेटा का विश्लेषण, 2001-2008. पब्लिक हेल्थ रिपोर्ट्स®. 2011;126(2):270-275.* doi.org/10.1177/003335491112600218
9. स्कोप्पा के (2010) *क्रांति और उसका अतीत: आधुनिक चीनी इतिहास में पहचान और परिवर्तन* एनजे: प्रेंटिस हॉल, 2010. https://doi.org/10.4324/9781315182025
10. शापिरो जे (2001): *प्रकृति के खिलाफ माओ का युद्ध* कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001 https://doi.org/10.1017/CBO9780511512063
11. स्टेफ़नी एल (2005) *सांस्कृतिक क्रांति का परिचय* https://spice.fsi.stanford.edu/docs/introduction_to_the_cultural_revolution